पानी की अहमियत

पुष्पेश कुमार पुष्प

नदियों के अविरल बहने का यह अर्थ नहीं कि हम पानी का संरक्षण न कर उसे व्यर्थ में बहायें। नदियां केवल हमारे लिए थोड़े ही बहती हैं। फिर हम इन नदियों को भी कहां साफ-स्वच्छ रख पा रहे हैं? इनको भी प्रदूषित करने में लोग कहां पीछे हैं? जबकि नदियों को साफ-स्वच्छ रखना हर इंसान का नैतिक कर्तव्य है। इनमें कूड़ा-कचरा आदि न डालकर इन्हें साफ-स्वच्छ रखने में सबको अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। तभी नदियों की अविरल धारा हमें नवजीवन प्रदान करेगी। प्रकृति ने हमें पर्याप्त संसाधन दिये हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि हम उनका दुरूपयोग करें। हमें जिस वस्तु की जितनी आवश्यकता हो, उसका उतना ही उपयोग करना चाहिए। तभी हम प्रकृति का संतुलन बनाए रख पाएंगे। जब हम जल को संचित नहीं कर सकते तो उसका दुरूपयोग करने का भी हमें अधिकार नहीं है।

''आज फिर टंकी का पानी बूंद-बूंद करके खत्म हो गया। बिना स्नान किए ही काम पर जाना पड़ेगा। हर दिन यही होता है। पानी की टंकी आधे-एक घंटे में खाली हो जाती है। आखिर एक हजार लीटर पानी इतनी जल्दी कैसे खत्म हो जाता है? कई बार मनोरमा को समझाया कि पानी को बेवजह मत बर्बाद किया करो, लेकिन वह मेरी बातों को अनसुना कर देती है।'' मनोज बरामदे में बैठा सोच रहा था।

''पापा, पापा! पानी खत्म हो गया। मैं स्नान किए बिना स्कूल कैसे जाऊंगा? मम्मी पानी को बेकार में बहा दिया करती हैं। हमें पानी को व्यर्थ में बहाने के बजाय उसे बचाना चाहिए। यूं ही पानी को बर्बाद करते रहे तो एक दिन धरती के समस्त जीवों का अस्तित्व संकट में पड़ जाएगा।'' विकास अपने पिता से बोला।

मनोज अपने बेटे की बात सुनकर दंग रह गया और यह सोचने पर विवश हो गया कि आज बच्चे भी पानी की अहमियत को समझते हैं, लेकिन बड़े नहीं समझते। बस यूं ही बिना सोचे समझे पानी को व्यर्थ बहा दिया करते हैं। आखिर कब इनकी आंखें खुलेंगी और कब ये पानी के महत्व को समझेंगे?

''पापा! आप कहां खो गये?'' विकास अपने पिता का ध्यान भंग करते हुए बोला।

''मैं यही सोच रहा था कि बच्चे भी पानी की अहमियत को समझते हैं, लेकिन लोग पानी को यूं ही बहा दिया करते हैं। इस विषय पर लोगों को सोचने की फुर्सत कहां है?'' मनोज विकास की ओर देखते हुए बोला।

''हमें लोगों को जागरूक करना होगा। उन्हें पानी के महत्व के बारे में बताना होगा। जल को बर्बाद करने के बजाय जल के संरक्षण पर बल देना होगा। वर्षा का जल भी यूं ही बर्बाद हो जाता है, यदि वर्षा जल एकत्र कर उपयोग में लाया जाए, तो पानी की कमी को सहजता से दूर किया जा सकता है।'' विकास बोला।

''हमें लोगों को जागरूक करना होगा कि वे जल को बर्बाद न कर उसका संरक्षण करें। जल संरक्षण से ही हमारा आने वाला भविष्य सुखमय होगा।'' विकास अपने पिता जी से बोला।

''तुम ठीक कहते हो। लोगों को जल के महत्व से परिचित कराना होगा, तभी लोग जल के महत्व को समझेंगे और पानी की बर्बादी पर अंकुश लगेगा। तुम तैयार होकर स्कूल जाओ। पानी की बर्बादी रोकने के लिए मैं कुछ करता हूँ।'' मनोज बोला।

विकास बिना स्नान किए ही स्कूल चला गया।

मनोज बरामदे में बैठा अपने अतीत में खो गया। एक समय था जब पानी की कितनी किल्लत थी। लोगों को पानी के लिए कोसों दूर जाना पड़ता था। आज जैसी सुविधा पहले कहां थी? उस समय के लोग पानी की अहमियत को समझते थे, क्योंकि उन्हें पानी लाने के लिए दूरस्थ स्थित तालाबों, कुओं, नदियों और नल का सहारा लेना पड़ता था। नल में पानी निश्चित समय पर आता और बंद हो जाता था। शहर के लोग नल पर लाइन लगाकर पानी भरते थे। गांव के लोग कुओं, तालाबों या दूर नदी से पानी लाते थे। यही कारण था कि तालाब, कुंओं और नदियों को वे साफ-स्वच्छ रखते थे।

उसे अपने बचपन के दिन याद आ गए जब वह अपनी मां के साथ गर्मी के दिनों में पानी लाने नदी तट पर जाता था। गर्मी में नदी सूख जाती थी और

लोग पानी प्राप्त करने के लिए नदी के रेत को हटाकर गड्ढा करते थे। तब जाकर उसमें पानी जमा होता था। उस पानी को ही वे बर्तन में लाकर पीते थे। आज जब सरकार ने लोगों के घरों तक जल पहुंचा दिया है तो लोग पानी की अहमियत को नहीं समझते।

"किस सोच में डूबे हो? बिजली भी नहीं है। बिना पानी भोजन कैसे बनेगा?" मनोरमा मनोज का ध्यान भंग करते हुए बोली।

"जब तक पानी को यूं ही बर्बाद करती रहोगी भोजन क्या पीने के लिए भी पानी मिलना दूभर हो जाएगा" यह कहकर वह कपड़े पहन काम पर जाने की तैयारी करने लगा।

"बिना स्नान किए कहां जा रहे हो?" मनोरमा बोली।

"लोगों को पानी की अहमियत बताने जा रहा हूं।" मनोज क्रोधित स्वर में बोला।

"जैसे मेरे बार-बार समझाने पर तुम समझ नहीं रही हो पानी का क्या महत्व है, तुम्हें कहां पता है? यदि तुम्हें पानी की अहमियत समझ में आ जाती तो पानी की बचत करती। इस प्रकार पानी की टंकी खाली नहीं हो जाती। विकास को बिना स्नान किए स्कूल नहीं जाना पड़ता।" मनोज गुस्से से बोला।

"गुस्सा क्यों होते हो? बिजली आते ही मोटर चलाकर टैंक भर दूंगी। फिर स्नान कर लेना।" मनोरमा मुस्कुराते हुए बोली।

"जिस दिन हम लोग पानी की अहमियत को समझ जाएंगे, पानी की बर्बादी रुक जाएगी। लोगों को बेवजह पानी की बर्बादी करते देख मेरा मन व्यथित हो जाता है। आमजन की सुविधा के लिए लगाए नल को लोग यूं ही खुला छोड़ देते हैं, तो कुछ लोग नल को ही पाइप से निकालकर फेंक देते हैं। इस प्रकार पानी की बेतहाशा बर्बादी होती है। जो कपड़े एक-दो बाल्टी पानी में धुल सकते हैं, उसके लिए कई बाल्टी पानी को यूं ही बर्बाद कर दिया जाता है। जरा सोचो! इतना पानी कितने लोगों की प्यास बुझा सकता था, लेकिन तुम जैसे लोग कुछ समझने को तैयार कहां हैं?" मनोज बोला।

"तुम्हारे कहने का मतलब है कि हम न तो ठीक से कपड़े धोयें और न ही ठीक से स्नान करें। पानी बचाने का आखिर तरीका क्या है?" मनोरमा बोली।

"नहाने और कपड़े धोने का मतलब यह नहीं कि हम उपयोग के बाद शेष अपशिष्ट पानी को बेवजह बर्बाद करें। हमें पानी की जितनी आवश्यकता हो, उतना ही उपयोग करना चाहिए। हमें शेष अपशिष्ट पानी को एकत्रित कर घर के बाग-बगीचे की सिंचाई में उपयोग करना चाहिए। वर्षा के जल को अपने आसपास गड्ढे खोदकर संरक्षित करना चाहिए, इससे पानी की समस्या सहज ही दूर हो सकती है। इसके अतिरिक्त वर्षा का जल यूं ही बर्बाद हो जाता है, इसके लिए हर किसी को आगे आना होगा तभी हम वर्षा के जल का संरक्षण कर पाएंगे।" मनोज मनोरमा की ओर देखते हुए बोला।

"हमारे देश में गंगा-यमुना जैसी विशाल नदियां बहती हैं। हमारे देश में पानी की कहां कमी है? हमारी नदियों में जल का अपार भंडार है। फिर इसके संरक्षण की क्या आवश्यकता?" मनोरमा बोली।

"नदियों के अविरल बहने का यह अर्थ नहीं कि हम पानी का संरक्षण न कर उसे व्यर्थ में बहायें। नदियां केवल हमारे लिए थोड़े ही बहती हैं। फिर हम इन नदियों को भी कहां साफ-स्वच्छ रख पा रहे हैं? इनको भी प्रदूषित करने में लोग कहां पीछे हैं? जबकि नदियों को साफ-स्वच्छ रखना हर इंसान का नैतिक कर्तव्य है। इनमें कूड़ा-कचरा आदि न डालकर इन्हें साफ-स्वच्छ रखने में सबको अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। तभी नदियों की अविरल धारा हमें नवजीवन प्रदान करेगी। प्रकृति ने हमें पर्याप्त संसाधन दिये हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि हम उनका दुरूपयोग करें। हमें जिस वस्तु की जितनी आवश्यकता हो, उसका उतना ही उपयोग करना चाहिए। तभी हम प्रकृति का संतुलन बनाए रख पाएंगे। जब हम जल को संचित नहीं कर सकते तो उसका दुरूपयोग करने का भी हमें अधिकार नहीं है।" मनोज मनोरमा के प्रश्न का उत्तर देते हुए बोला।

"जमीन के नीचे भी भूजल का अपार भंडार है। अतः कभी भी पानी की कमी होने का प्रश्न ही नहीं उठता।" मनोरमा फिर बोली।

"जमीन के नीचे भूजल का अपार भंडार है तो क्या उसका भी दोहन कर बर्बाद कर दिया जाए? भूजल के अत्यधिक दोहन के कारण ही भूजल का स्तर नीचे गिरता जा रहा है। और कहीं-कहीं तो जल में फ्लोराइड की मात्रा अधिक होने के कारण यह पीने योग्य भी नहीं रह गया है। यदि हम नहीं सुधरे तो वह दिन दूर नहीं जब पानी के लिए तीसरा विश्व युद्ध होगा। लोग पानी के लिए तरसेंगे और हमारा जीवन संकट में पड़ जाएगा।" मनोज नितांत उदास स्वर में बोला।

"तुमने ठीक कहा। जल ही जीवन है। पानी हमारे लिए बहुमूल्य है। इसकी बर्बादी न कर इसे संचित करने की आवश्यकता है। पानी के बगैर सम्पूर्ण जीवों का अस्तित्व ही संकट में पड़ जाएगा। नदियों, तलाबों को साफ-स्वच्छ रखना हर इंसान का नैतिक कर्तव्य है, तभी हर जीव को साफ और स्वच्छ जल मिल पाएगा। जल का संरक्षण करके ही हम अपने आने वाले कल को बेहतर बना पाएंगे। आज तुमने मेरी आंखें खोल दीं। अब कभी जरूरत से ज्यादा पानी खर्च नहीं करूंगी। जल की महत्ता से लोगों को अवगत कराऊंगी।" मनोरमा अपनी गलती स्वीकार करते हुए बोली।

उसे पानी की अहमियत समझ में आ गई थी।

ग्रामीण क्षेत्रों में दूरस्थ क्षेत्रों से पेयजल ले जाती महिलाएं

संपर्क करें:

पुष्पेश कुमार पुष्प

विनती भवन,

निकट-बैंक ऑफ इंडिया,

काजीचक, सवेरा सिनेमा चौक,

बाढ़-803213 (बिहार)